मुसलमानों ने इस देश को क्या दिया

★ मौलाना अबुल हसन अली नदवी

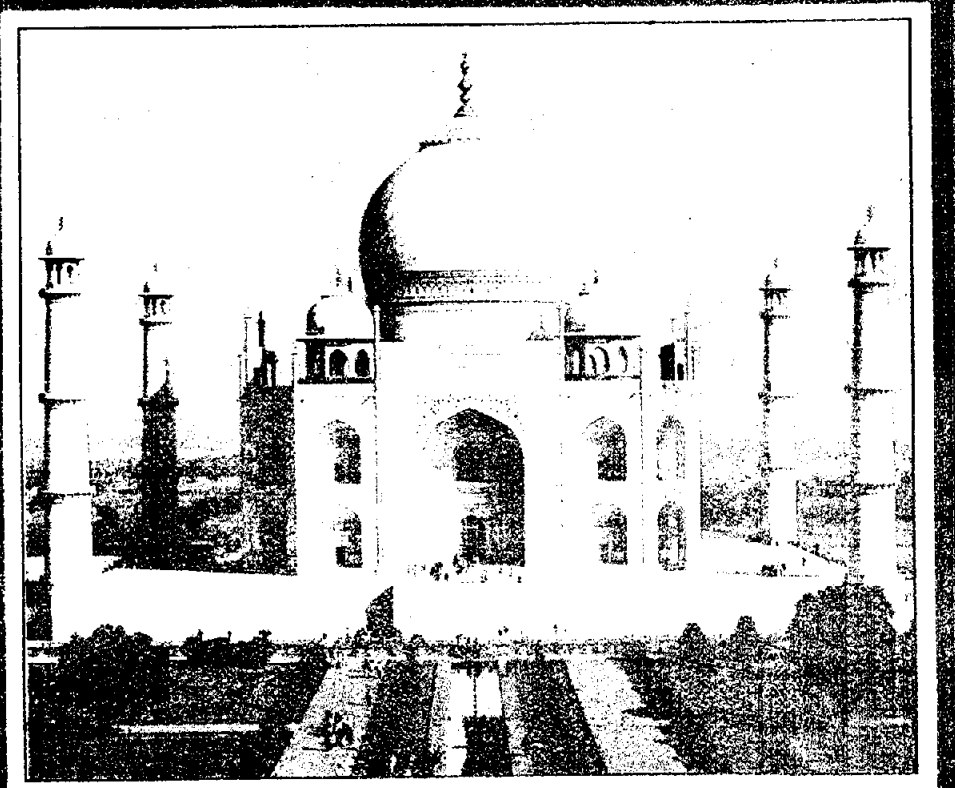

: प्रकाशक :

प्यामे इंसानियत फ़ोरम

पो0 बाक्स 93, टैगोर मार्ग

www.abulhasanalinadwi.org

मुसलमानों ने इस देश को क्या दिया

मौलाना अबुल हसन अली नदवी

अनुवादक
मो० हसन अंसारी

प्रकाशक
प्यामे इंसानियत फ़ोरम
मुख्य-कार्यालय,
नदवतु उलमा, लखनऊ

www.abulhasanalinadwi.org

सर्वाधिकार सुरक्षित :
पयामे इन्सानियत फ़ोरम
पोस्टबाक्स–93
नदवतुल उलमा, लखनऊ

1995

मुद्रक :
पारिख आफसेट
टैगोर मार्ग लखनऊ ।

दो शब्द

क़ौमी एकता का एक बुनियादी सिद्धान्त यह है कि दूसरों के विचारों को सुना जाये और दृष्टिकोण को जाना जाये और उसकी क़द्र की जाये; उनपर भरोसा किया जाये। शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के लिए ज़रूरी है कि हर क़ौम दूसरी क़ौम के मिज़ाज, अभिरुचि, आस्था व परम्पराओं, सामूहिक आचरण, उसकी सर्जनात्मक क्षमताओं से न केवल परिचित हो अपितु उनका आदर और उनकी क़द्र भी करती हो।

यह एक अजीब विरोधाभास और भारत के राष्ट्रीय जीवन की रिक्त है कि यहाँ की आबादी का एक बड़ा हिस्सा दूसरे बड़े हिस्से के प्राचीन इतिहास और उनके तहज़ीबी वरस: से अपरिचित और बेगाना है। और इस सच्चाई से अनभिज्ञ है कि उसने देश के विकास उसके निर्माण और आज़ादी की लड़ाई में क्या हिस्सा लिया है और उसका इस देश के विकास में क्या योगदान है। भारत के विभिन्न तत्वों में सामँजस और पारस्परिक एकता व विश्वास, जो देश की उन्नति के लिए अपरिहार्य है, उस समय तक पैदा नहीं हो सकता जब तक हम एक दूसरे की देश के निर्माण व विकास के कार्य में उपादेयता और ज़रूरत 'उसकी क़दर व क़ीमत और उसके सहयोग से प्राप्त होने वाली विकास की सम्भावनाओं को न समझते हों'।

इसी आवश्यकता की अनुभूति इन पृष्टों के प्रकाशन का कारण है। आशा है यह हर वर्ग में दिलचस्पी और ध्यान से पढ़ा जाएगा और शायद वह अनभिज्ञता और बेजा पूर्व आग्रहों के कम करने में, तथा एक उदार व न्याय संगत दृष्टिकोण पैदा करने में कोई लाभप्रद

www.abulhasanalinadwi.org

सेवा कर सके जिसकी हमारे राष्ट्रीय जीवन को सख्त जरूरत है। और यह हक़ीक़त उत्साहवर्द्धक है कि अभी देश के बुद्धिजीवी वर्ग में श्री बी० एन० पाण्डे (भूतपूर्व राज्यपाल उड़ीसा) प्रो० जगन्नाथ आजाद जैसे खुले जिहन, उदार, विद्वान और इन्साफ़ पसन्द लोगों की कमी नहीं है, इसलिए और भी इस संकलन को हिन्दी में प्रकाशित करना समय की एक बड़ी जरूरत को पूरा करना समझा गया।

खुदा इस कोशिश को ठिकाने लगाये।

28 जूलाई 1995 ई०
29 सफ़र 1416 हिज्री

अबुल हसन अली नदवी
तकिया कलाँ, रायबरेली

(1)

"मुसलमानों ने इस देश को क्या दिया"

भारत की सभ्यता व संस्कृति पर मुसलमानों का प्रभाव।

मुसलमान सूफ़ी-सन्त

इस विशाल देश में मुसलमान कभी तो हर प्रकार के सांसारिक लाभ से विरक्त होकर विशुद्ध धार्मिक भावना के तहत प्रवेश किये और कभी विजेता बनकर। वह यहाँ न्याय और इन्साफ़ का सन्देश लेकर आये, रोशनी और खुलापन लेकर आये इस धरती में प्रकृति के अनमोल खज़ानों के विकास के तरीक़े लेकर आये और ग़ुलामी व दासता की ज़ँजीरों से जकड़े हुए बेवस इन्सानों को दुनिया के मालिक की दी हुई आज़ादी से लाभान्वित होने का अवसर लेकर आये। इस्लाम के निःस्वार्थ सेवकों और सूफ़ी-सन्तों की जीवनी में इसके उत्कृष्ट दृष्टान्त मिलते हैं, वे सूफ़ी-सन्त जिनकी छत्र-छाया में भारतीय समाज के सताये हुए हजारों उत्पीड़ितों को न केवल पनाह व शरण मिली, अपितु वे उनके यहाँ सगे बाप-बेटों और भाई-बहनों की तरह रहने लगे। सय्यद अली हिजवेरी, ख्वाजा मुईन उद्दीन अजमेरी और सय्यद अली बिन शहाब हमदानी कशमीरी की गणना इन्हीं बुजुर्गों में होती है।

विजेता और शासक

कभी मुसलमान इस देश में विजेता, सिपहसालार और उत्साही शासक की हैसियत से आये जैसे महमूद गज़नवी, शहाब उद्दीन

www.abulhasanalinadwi.org

मोहम्मद गोरी और ज़हीर उद्दीन बाबर तैमूरी। इन बादशाहों के हाथों इस देश में ऐसी महान हुकूमत की बुनियाद पड़ी जिसने लम्बे समय तक इस देश की सेवा की और इसे सुख और समृद्धि की चरम सीमा तक पहुँचा दिया।

देश से स्थायी लगाव और सेवा की भावना

सारांश यह है कि मुसलमान जिस हैसियत से भी इस देश में आये उन्हों ने इसे अपना वतन समझा। उनका अक़ीदा था कि ज़मीन अल्लाह की है वह जिसको चाहता है अपनी धरती का वारिस व निगहबान (रखवाला) बना देता है। वे अपने को अल्लाह (परमेश्वर) की ओर से उसकी धरती का व्यवस्थापक और इस जगत का सेवक समझते थे। इसलिए मुसलमानों ने सदैव इस देश को अपना वतन, अपना घर और अपना स्थायी निवास समझा जिस से वे कभी अपनी निगाहें फेर न सकते थे। अतएव इस देश की सेवा के लिए उन्हों ने अपनी उत्कृष्ट क्षमतायें लगा दीं। उनका विचार था कि वे इस देश की सम्पदा में जो भी अभिवृद्धि करेंगे वह मानो स्वयं उनकी अपनी समृद्धि में अभिवृद्धि होगी। क्योंकि उनका भविष्य इसी धरती से जुड़ा है। इस सोच का स्वाभाविक नतीजा यह था कि भारत के मुसलमान इस देश को जिस दृष्टि से देखते थे वह अंग्रेज़ों और अन्य साम्राज्यवादी पसन्द ताकतों से बिल्कुल भिन्न थी। योरोप की साम्राज्यवादी ताकतों का उद्देश्य केवल यहाँ की दौलत खींचना था, शोषण करना था। वास्तव में उनके सामने इस देश की हैसियत एक उधार ली गई दुधारी गाय की सी थी जो उनके पास थोड़े दिन रहकर वापस जाने वाली थी, इस लिए वे इस को अच्छी तरह दुह लेना चाहते थे।

बाहर की सभ्य और विकसित दुनिया से भारत का अलग थलग रहना

मुसलमान जब भारत में आये तो यहाँ प्राचीन ज्ञान व फ़लसफ़ा (दर्शनशास्त्र) मौजूद था। खाद्यान, मेवा और कच्चे पदार्थ प्रचुरमात्रा

में पैदा होते थे, लेकिन सभ्य व विकसित दुनिया से वह लम्बे समय से अलग थलग था। एक ओर ऊँचे-ऊँचे पर्वत और दूसरी ओर विशाल सागर उसे बाहर की दुनिया से सम्पर्क में आने से रोकते थे सब से अन्तिम राजा जो बाहर के सभ्य संसार से यहाँ आया वह सिकन्दर महान था, उसके बाद से मुसलमानों के आने तक बाहर की दुनिया से इस देश का कोई रिश्ता न था, न तो विदेश के विचार, ज्ञान विज्ञान और प्रशासन व्यवस्था के नये तरीक़े यहाँ तक पहुँच सकते थे और न यहाँ के प्राचीन ज्ञान बाहर जा सकते थे।

सभ्य और विकसित दुनिया से सम्पर्क के साधन

ऐसी दशा में जब मुसलमान इस देश में आये तो उनके साथ एक नया विवेकपूर्ण और हिकमत से भरा व्यवहारिक धर्म था। पक्का ज्ञान, विकसित सभ्यता, सभ्य आचरण, अनेक सभ्यताओं के बहुमूल्य अनुभव, परिपक्व विचार, और दुनिया की बहुत सी क़ौमों के प्रबुद्ध लोगों के विचार व चिन्तन को साथ लेकर वे यहाँ आये। इन में अरबों की सुरूचि, ईरानियों की मृदुलता और तुर्कों की सादगी व सरलता शामिल थी, इसके अलावा अनेक दुर्लभ चीज़ें और अनोखी वस्तुएँ थीं।

अद्वैतवाद की इस्लामी भेंट

सबसे दुर्लभ और बहुमूल्य भेंट जो मुसलमान यहाँ लाये वह इस्लाम का विशुद्ध और बे मेल तौहीद (अद्वैतवाद) का अक़ीदा था जिसके तहत (अन्तर्गत) आराधक और आराध्य के मध्य दुआ व इबादत के लिए किसी बीच की हस्ती की ज़रूरत नहीं है। इस अक़ीदे में "अनेक ख़ुदाओं" और "ख़ुदा का किसी मख़्लूक़ (कृति) में विलीन हो जाना और दोनों का मिलकर एक हो जाना" के विचारधारा की गुंजाइश नहीं, बल्कि एक ख़ुदा (जो किसी का मुहताज नहीं और जिसके सब मुहताज हैं) का इक़रार और उसी पर आस्था रखना है जिसके न कोई बेटा है न बाप और न ख़ुदाई में कोई

www.abulhasanalinadwi.org

उसका साझी व शरीक। सृष्टि का जन्म, संसार की व्यवस्था और धरती व आकाश का प्रभुत्व उसी के हाथ में है। इस अकीदे व विश्वास का प्रभाव भारत पर जो शताब्दियों से विशुद्ध अद्वैतवाद के अकीदे: से अपरिचित था, स्वाभाविक था। हिन्दू सभ्यता और हिन्दू धर्म पर इस्लाम के प्रभाव का उल्लेख करते हुए विख्यात इतिहासकार (K. M. Panikkar) लिखते हैं :-

"यह बात तो साफ़ है कि इस युग में हिन्दू धर्म पर इस्लाम का गहरा प्रभाव पड़ा। हिन्दुओं में ईश्वर की आराधना की परिकल्पना इस्लाम ही की बदौलत पैदा हुई। और इस ज़माने के तमाम हिन्दू रहनुमाओं ने, अपने देवताओं का नाम चाहे कुछ भी रखा हो, ख़ुदापरस्ती ही की शिक्षा दी, अर्थात् अल्लाह एक है, वही इबादत के लायक़ है, और वही नजात (मोक्ष) देने वाला है"[1]

भाईचारा और बराबरी का सन्देश

सामुदायिक जीवन में भारत के लिए सब से नई और क़ीमती चीज़ इस्लामी भाईचारा और बराबरी की परिकल्पना थी। मुसलमानों के यहाँ न तो वर्ग-भेद था और न अछूत नाम की कोई जाति थी। उनका विश्वास और अकीदा था कि कोई व्यक्ति जन्मजात अपवित्र अथवा अज्ञान नहीं होता कि जिसको ज्ञानार्जन का हक़ न हो। किसी व्यवसाय अथवा उद्योग के लिए कोई जाति-विशेष नहीं थी, बल्कि वे एक साथ रहते थे, खाते पीते थे, और अमीर व ग़रीब सब मिल जुल कर ज्ञानार्जन के प्रयास करते थे, हर व्यक्ति को हक़ था जो पेशा चाहे अपनाये।

इन्सानी बराबरी की यह व्यवस्था भारतीय समाज के लिए एक नया अनुभव और चिन्तन का आह्वान था जिस से इस देश को

1. A Survey of Indian History (pp. 132) by K. M. Panikkar.

बड़ा लाभ पहुँचा। इसके परिणाम स्वरूप प्रचलित वर्ण व्यवस्था के बन्धन बहुत हद तक ढ़ीले पड़ गये और देश में वर्ण व्यवस्था के विरोध में प्रति क्रिया प्रारम्भ हो गयी और समाज सुधारकों के लिए इस ने एड़ का काम किया।

पंडित जवाहर लाल नेहरू ने इतिहास की इस सच्चाई को इन शब्दों में स्वीकार किया है :-

"उत्तर-पच्छिम से आने वाले हमलावरों और इस्लाम का आगमन भारत के इतिहास में बड़ा महत्व रखता है। इसने उन ख़राबियों को, जो भारत में पैदा हो गई थी, अर्थात्-वर्ण-भेद, छुआछूत और वैराग्य, उजागर किया। इस्लाम के भाईचारा के दृष्टिकोण और मुसलमानों की व्यावहारिक बराबरी ने हिन्दुओं के मन-मस्तिष्क पर बहुत गहरा प्रभाव डाला, विशेषकर वे लोग इससे बहुत प्रभावित हुए, जो हिन्दू समाज में बराबरी और समता के अधिकार से वंचित थे।"[1]

नारी के अधिकार और कुछ रस्मों का सुधार

दूसरी भेंट जो मुसलमान इस देश के लिए लाये वह नारी का प्रतिष्ठा और परिवार में उसको मान-मार्यादा और उसके अधिकारों की स्वीकारोक्ति थी। यहाँ सती प्रथा का चलन और रिवाज था। पत्नी पति की मृत्यु पर सती हो जाती थी क्योंकि समाज और स्वयं उनकी निगाह में पति के बाद उन्हें जीवित रहने का अधिकार ही न था। सती प्रथा के सुधार में मुस्लिम बादशाहों और उनके सहयोगियों ने हिस्सा लिया। भारत का विख्यात सैलानी डा० बर्नियर लिखता है :-

"आजकल पहले की अपेक्षा 'सती' की संख्या कम हो गई है, क्योंकि मुसलमान जो इस देश के शासक हैं इस प्रथा को समूल समाप्त करने का यथा सम्भव प्रयास करते हैं।

1. Discovery of India by Pt. Jawahar Lal Nehru.

www.abulhasanalinadwi.org

और यद्यपि इसे लागू करने के लिए कोई कानून नहीं है, क्योंकि उनकी नीति का एक अँश है कि हिन्दुओं के मामलों में हस्तक्षेप करना उचित नहीं समझते, बल्कि उन्हें धार्मिक संस्कारों को सम्पन्न करने की आज़ादी देते हैं। फिर भी सती प्रथा को कुछ न कुछ तरीकों से रोकते रहते हैं। यहाँ तक कि कोई औरत अपने प्रान्त के शासक की अनुमति के बिना सती नहीं हो सकती और सूबेदार कदापि अनुमति नहीं देता जब तक कि निश्चित रूप से उसे विश्वास नहीं हो जाता कि वह अपने इरादे से हरगिज बाज नहीं आयेगी। सूबेदार विधवा को समझाता और बहुत से वादे करता है और उसे डराता है। और यदि उसके उपाय कारगर नहीं होते तो कभी ऐसा भी करता है कि अपने महलसरा में बेगमात के पास भेज देता है ताकि वे भी उसको अपने-तौर पर समझायें। किन्तु इन सब के बावजूद 'सती' की संख्या अब भी बहुत है। विशेषकर उन राजाओं के इलाक़ों में जहाँ कोई मुसलमान सूबेदार नहीं है।"[1]

इतिहास लेखन

बहुत से आधुनिक ज्ञान भी मुसलमान भारत लाये। ज्ञान की इन शाखाओं में इतिहास लेखन की कला बहुत महत्व रखती है। क्योंकि उस समय तक इस कला का यहाँ सर्वथा अभाव था यहाँ कोई किताब सही अर्थों में इतिहास की किताब कहलाने योग्य न थी। केवल धार्मिक उपनिषद, वीर-गाथायें और महाभारत व रामायण की

[1] फ्रांसीसी यात्री डा० बर्नियर ने शाहजहाँ के शासनकाल में भारत का भ्रमण किया था। उसके सफरनामों का नाम है Travel in Mughal Empire, यह उद्धरण खण्ड दो से उद्धरित है।

प्रतियाँ उपलब्ध थीं। मुसलमानों ने इतिहास लेखन में पूरे पूरे पुस्तकालय तैयार कर दिये।

डा० गस्टेव ले बान "तमद्दुने हिन्द" खण्ड तीन में भारत के इतिहास का उल्लेख करते हुए लिखता है।

"प्राचीन भारत का कोई इतिहास ही नहीं है। इनकी किताबों में ऐतिहासिक घटनायें बिल्कुल दर्ज नहीं हैं और न उनकी इमारतों और यादगारों से इस कमी की पूर्ति होती है। क्योंकि पुरानी से पुरानी यादगार मुश्किल से तीसरी शताब्दी से पूर्व की है। कुछ धार्मिक ग्रन्थों के अलावा जिन में कुछ ऐतिहासिक घटनायें, कहानियों और कथाओं के रूप में दर्ज हैं, प्राचीन भारत के हालात मालूम करना उतना ही कठिन कार्य है जितना कि उस काल्पनिक द्वीप 'एटलान्टस' का जो प्लेटो के कथनानुसार धरती के उथल-पुथल के कारण तबाह होगया"।

फिर यह लिखने के बाद कि वेद और रामायण व महाभारत से इस देश की परिस्थितियों पर कुछ प्रकाश पड़ता है, वह लिखता है।

"भारत का इतिहास-युग वस्तुतः मुसलमानों की फ़ौज कुशी के बाद से प्रारम्भ हुआ, और भारत के प्रथम इतिहासकार मुसलमान थे"।

नयी शैलियाँ

भारत को मुसलमानों से आमतौर पर उदार दृष्टिकोण और साहित्य की नयी शैलियाँ मिलीं। नया दृष्टिकोण बिना बौद्धिक, साहित्यिक और वैचारिक सामंजस्य के असम्भव था। अन्य उपहारों के अलावा मुसलमानों ने भारत को उर्दू भाषा का उपहार दिया जो एक व्यापक और मीठी भाषा है। इस देश की सभ्यता व संस्कृति, उद्योग-धंधों और जीवन-शैली पर मुसलमानों की छाप अन्य संकायों की

www.abulhasanalinadwi.org

अपेक्षा अधिक गहरी नज़र आती है। उनके आने से इस देश में आई क्रान्ति ठीक उसी प्रकार है जैसे आधुनिक योरोप का जीवन वहाँ के मध्ययुग के जीवन से बिल्कुल भिन्न है।

प्राचीन भारत का चित्रण बाबर की लेखिनी से

मुसलमानों ने इस देश की सभ्यता व संस्कृति की पूंजी में जो बहुमूल्य अभिवृद्धि की है, उसके महत्व को समझाने के लिए आवश्यक है कि पहले हम भारत के उस युग का जायज़ा (सिंहावलोकन) लें, जब मुसलमान यहाँ नहीं आये थे। मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक ज़हीर उद्दीन बाबर (सन् 1483-1523) ने मुसलमानों के आगमन से पूर्व इस देश के जीवन का बहुत ही स्पष्ट चित्रण किया है। बाबर अपनी "तोज़क" में लिखता है :-

"हिन्दुस्तान में अच्छे घोड़े नहीं। अच्छा गोश्त नहीं, अँगूर नहीं, ख़रबूज़ा नहीं, बर्फ़ नहीं, ठँडा पानी नहीं, हम्माम नहीं, मदरसः नहीं, शमा (ज्योति) नहीं, मशाल नहीं, शमादान नहीं, शमादान के बजाय डेवट होता है, यह तीन पाये का होता है, एक पाये में चिराग़दान के मुँह की शक्ल का एक लोहा लकड़ी में फिट कर के लगा देते हैं, एक धीमी बत्ती दूसरे पाये में लगी होती है, दाहिने हाथ लौकी की एक तोंवी होती है जिसका सूराख़ तँग होता है इसी की राह से तेल की पतली सी धार गिरती है। राजों महाराजों को रात के समय रोशनी का कुछ काम पड़ता है तो नौकर यही गन्दी डेवट लेकर उन के पास खड़े होते हैं।

बाग़ों और इमारतों में प्रवाहित जल नहीं, इमारतें न साफ़ हैं न सुडौल, उन में न हवा है न अनुपात। आम आदमी नँगे पैर एक लँगोटी लगाये फिरते हैं, औरतें धोती बाँधती हैं जिसका आधा भाग कमर से लपेट लेती हैं, और आधा सर पर डाल लेती हैं।"

पंडित जवाहरलाल नेहरू अपनी पुस्तक "भारत की खोज" में बाबर के उक्त कथन पर टिप्पणी करते हुए लिखते हैं कि :-

"बाबर के लिखे हुए इतिहास से हमें सभ्यता की उस कँगाली का पता चलता है जो उत्तरी भारत पर छायी हुई थी। इसका कारण कुछ तो वह बर्बादी थी जो तैमूर के आक्रमण के कारण हुई और कुछ यह बात थी कि अनेक विद्वान, कलाकार और चित्रकार उत्तरी भारत छोड़कर दक्षिणी भारत की ओर चले गये थे। इस पतन का एक कारण यह भी था कि भारतीयों की सर्जनात्मक शक्तियों के स्रोत शुष्क हो गये थे।

बाबर कहता है कि इस देश में होशियार कारीगरों और चित्रकारों की कमी नहीं है किन्तु यहाँ के मेकनिकी नये आविष्कारों में बौद्धिकता और होशियारी बिल्कुल नहीं।"

फलों का विकास

हरियाली के बावजूद इस देश में मेवा और फल बहुत कम संख्या में और घटिया प्रकार के होते थे और जो कुछ पैदा होते थे वे प्रायः स्वतः उग आते थे जिनकी ओर देशवासी वाँछित ध्यान न देते थे, लेकिन जब मुग़ल इस देश में आये तो उन्होंने मेवा और फलों को बड़ी तरक्क़ी दी जिस का विवरण "तोज़क बाबरी" और "तोज़क जहाँगीरी" में अँकित है। मुग़लों ने भारतीय फलों की ओर विशेष ध्यान दिया। और विभिन्न प्रकार के फलों को एक दूसरे के साथ क़लम करके अनेक अनोखी क़िस्में खोज निकालीं। आम हिन्दुस्तान का मशहूर और सब से स्वादिष्ट फल है। मुग़लों के आगमन से पूर्व इसकी केवल एक क़िस्म अर्थात् "तुख्मी आम" होती थी लेकिन उन्होंने क़लमी आम की खोज की और आज क़लमी आम की इतनी क़िस्में पैदा होने लगीं जिनकी गणना मुश्किल है।

www.abulhasanalinadwi.org

उद्योग-धँधे, कृषि और व्यापार का विकास

यही हाल कपड़ा उद्योग का था। हिन्दुस्तानी आमतौर से गज़ी गाढ़ा और साधारण प्रकार के मोटे सूत अथवा कच्चे ऊन का कपड़ा पहनते थे।

सुल्तान महमूद बिन मोहम्मद शाह गुजराती ने जो महमूद बेगड़ा (मृत्यु 917 हिज्री) के नाम से विख्यात था, अनेक कारख़ाने स्थापित किये थे जिन में कपड़े की बुनाई रँगाई, छपाई और डिज़ाइन तैयार करने का काम होता था। पत्थर तराशने, हाथी दाँत, रेशमी कपड़े और काग़ज के कारख़ाने भी क़ायम किये गये सुल्तान महमूद की सुरूचि उच्च कोटि की थी। उसने देश के कोने कोने में बेमिसाल औद्योगिक, कृषि और व्यापार सम्बन्धी क्रान्ति पैदा कर दी थी। हिन्दुस्तान के महान इतिहासकार सैयद अब्दुल हयी अपनी पुस्तक "नुज़हतुल ख़वातिर" खण्ड चार के पृष्ट 345 पर सुल्तान महमूद का उल्लेख करते हुए लिखते हैं :–

> "सुल्तान के महान कार्यों में देश का विकास, मस्जिदों मदरसों और मुसाफ़िरख़ानों का निर्माण, कृषि उत्पादन में वृद्धि और फलदार वृक्षों का रोपण, और बाग़ों का लगवाना शामिल है। उसने लोगों को इन कार्यों के लिए उभारा। और सिंचाई के लिए कुँए और नहरें बनवायीं। इसीलिये कारीगर उद्योग-धन्धों के अच्छे जानकार ईरान व तुर्किस्तान से उसके पास बड़ी संख्या में आये और अपने उद्योग यहाँ लगाये। फलतः गुजरात एक हरा-भरा क्षेत्र बन गया और यहाँ लहलहाते खेत और घने बाग़ दिखाई पड़ने लगे और मेवा व फलों की पैदावार होने लगी। और गुजरात एक व्यापारिक मण्डी बन गया जहाँ से उच्च कोटि के बहुमूल्य वस्त्र भारत से बाहर भेजे जाते थे। यह सब सुल्तान महमूद की लगन और देश के विकास और समृद्धि के प्रति उसकी जागरुकता का नतीजा था।"

शेरशाह और अकबर द्वारा कृषि के क्षेत्र में किये गये सुधार

आराज़ी के लगान और ज़मीन जायदाद की पैमाइश आदि की व्यवस्था व बन्दोबस्त में मुसलमान बादशाहों ने विशेष सुधार किये। क़ानून बनाये। रेवेन्यु विशेषकर सिक्कों की व्यवस्था के क्रम में जो सुधार उनके ज़माने में हुआ वह भारत के लिए नया था। क़ानून बनाने और प्रशासनिक व्यवस्था को सुदृढ़ करने में शेरशाह सूरी को दक्षता प्राप्त थी, उसका अनुसरण बाद में अकबर ने किया।

जन-कल्याण के कार्य

अस्पतालों और मुहताजख़ानों की स्थापना, पब्लिक गार्डन मनोरँजन स्थल, बड़ी बड़ी नहरों और विशाल तालाबों का बनवाना मुस्लिम हुकूमतों के कारनामे हैं। जानवरों की ट्रेनिंग और उनकी नस्लों के विकास में भी उनका विशिष्ट योगदान था। भारत के पूर्वी भाग को पश्चिमी भाग से जोड़ने वाली सब से लम्बी सड़कें भी मुसलमान बादशाहों की बनवाई हुई हैं। इन में सब से मशहूर सड़क शेरशाह सूरी की बनवाई हुई सड़क है जो पूरब में सोनार गाँव से ले कर पश्चिम में नीलाब तक जाती है। इसकी लम्बाई 4832 किलो-मीटर (3000 मील) है। हर तीन किलोमीटर पर एक मुसाफ़िर-ख़ाना होता था जिस में एक लँगर हिन्दुओं के लिए और दूसरा मुसलमानों के लिए होता था। साथ ही एक मस्जिद भी हर दूसरे मील पर बनाई गई थी। जिसके इमाम मुक़र्रर थे। हर मुसाफ़िरख़ाने में सन्देश और डाक ले जाने के लिए तेज़रफ़्तार दो घोड़े रहते थे जिन की सहायता से प्रतिदिन नीलाब की ख़बरें बँगाल की सुदूर सीमा तक पहुँचाई जाती थीं। सड़क के किनारे दो क़तारों में फलदार वृक्ष लगाये गये थे जिनकी छाया और जिनका फल यात्रियों के लिए बड़ी नेमत थी।[1]

---

1. विस्तार के लिये देखें :– (i) "तोज़क जहाँगीरी" (ii) "आईन अकबरी" और (iii) "जन्नतुल मशरिक़" लेखक : सैयद अब्दुल हयी जिसका उर्दू और अँग्रेजी एडिशन "अकादमी आफ इस्लामिक रिसर्च एण्ड पब्लिकेशन्स पो० बाक्स 119 लखनऊ" से प्राप्त किया जा सकता है।

www.abulhasanalinadwi.org

रहन सहन के तरीक़ों में फैलाव व पाकीज़गी (पवित्रता)

इसके अतिरिक्त मुसलमानों ने हिन्दुस्तान को पाकीज़गी, खान-पान की वस्तुओं में सुरूचि, स्वास्थ्य के नियमों की पाबन्दी, मकानों को हवादार और रोशनदान बनाने का तरीक़ा और क़िस्म क़िस्म के खाने पीने के बर्तनों से भी परिचित कराया। उन्होंने आधुनिक निर्माण कला भी ईजाद की जिसमें गम्भीरता, मृदुलता सौन्दर्य और सुडौलता व अनुपात का वास होता था। ताजमहल उस स्वर्णिम युग की याद ताज़ा करता रहेगा।

सभ्यता व संस्कृति पर गहरे प्रभाव

पंडित जवाहर लाल नेहरु ने "भारत की खोज" पुस्तक के पृष्ठ 219 पर भारतीय समाज, विचाराधार और सभ्यता व संस्कृति पर मुसलमानों के अविसमरणीय गहरे प्रभावों को स्वीकार करते हुए लिखा है :—

"भारत में इस्लाम के और उन विभिन्न जातियों के आगमन ने, जो अपने साथ नये विचार और विभिन्न जीवन-शैली लेकर आयी, यहाँ के आस्था (अक़ीदा) और स्वरूप को प्रभावित किया। बाहरी विजय चाहे कुछ भी बुराइयाँ लेकर आयी उसका एक लाभ अवश्य होता है, यह जन-साधारण के बौद्धिक छितिज में विशालता पैदा कर देती है और उन्हें मजबूर कर देती है कि वे अपने घेरे से बाहर निकलें। वह यह समझने लगते हैं कि दुनिया इस से कहीं अधिक बड़ी और रंगारंग है जैसी कि वह समझ रहे थे।

बिल्कुल इसी प्रकार अफ़ग़ान विजय ने भारत पर प्रभाव डाला और बहुत से परिवर्तन आये। इससे भी अधिक परिवर्तन उस समय प्रकट हुए जब मुगल भारत में आये। क्योंकि वे अफ़ग़ानों से अधिक सभ्य और विकसित थे। उन्होंने

भारत में विशेष रूप से उस नफ़ासत को रायज (प्रचालित) किया जो ईरान का हिस्सा थी।"

इस सच्चाई को कांग्रेस के भूतपूर्व अध्यक्ष और स्वतंत्रता संग्राम के एक लीडर डा० पट्टाभि सीता रमैया ने भी 1948 में जयपुर में आयोजित कांग्रेस अधिवेशन में अपने अध्यक्षीय भाषण में इन शब्दों में स्वीकार किया है :—

"मुसलमानों ने हमारे कलचर को मालामाल किया है, और हमारे प्रशासन को सुदृढ़ और मज़बूत बनाया, और देश के सुदूर क्षेत्रों को एक दूसरे से निकट लाने में कामयाब हुए। इस देश के साहित्य और सामूहिक जीवन में उनकी छाप बहुत गहरी दिखाई देती है।"

स्वास्थ्य सेवायें

मुसलमानों के आगमन और उनके शासन के कारण भारत को तत्कालीन सभ्य और विकसित संसार में जो महत्व प्राप्त हो गया था, उसकी बदौलत इस देश को जो बौद्धिक व भौतिक लाभ प्राप्त हुए उनमें एक "यूनानी चिकित्सा व्यवस्था" भी है, यह चिकित्सा पद्धति आधुनिक चिकित्सा पद्धति से पूर्व दुनिया की सब से विकसित और सब से अधिक प्रचलित पद्धति थी और स्पेन, ईराक़ ईरान व तुर्किस्तान अपने शीर्षस्थ विकास के दिनों में यूनानी चिकित्सा पद्धति के सब से बड़े केन्द्र थे; और वहीं मध्य युग में इसके महान ज्ञाता और पंडित पैदा हुए। भारत में मुसलमानों की सल्तनत क़ायम हो जाने के बाद, और शाही दरबार में ज्ञान-विज्ञान की क़द्रदानी की ख़बरें सुन कर इन देशों के विशेषज्ञ भारत आते रहे। यह क्रम सातवीं हिज्री से आरम्भ होकर लगभग बारहवीं सदी तक जारी रहा। बाहर से आये इन विशेषज्ञों के ज्ञान, सेवाभाव, लगन और उनकी क्षमता व योग्यता की बदौलत यूनानी चिकित्सा पद्धति भारत में अपनी चरम सीमा पर

www.abulhasanalinadwi.org

पहुँच गयी, और इसके सामने तमाम प्राचीन चिकित्सा पद्धतियाँ मन्द पड़ गयी भारत का कोई नगर, क़स्बा चिकित्सकों से ख़ाली नही रहा यह चिकित्सा पद्धति सस्ती भी थी और सुलभ भी थी और भारत की जलवायु और यहाँ के लोगों के मिजाज के अनुकूल भी। इसलिए इसका बड़ी तेज़ी के साथ विकास हुआ। और इसने इस देश की एक बड़ी आबादी (विशेषकर ग़रीब ग्राम वासियों) की बड़ी सेवा की। भारत के चिकित्सकों ने अपनी बुद्धि परिश्रम और अनुभव से इसको चार चाँद लगा दिये। अन्तिम दिनों में दिल्ली और लखनऊ इसके दो प्रमुख केन्द्र थे। अब तो सारे विश्व में भारत ही इसका केन्द्र रह गया है और इसी के दम से यह चिकित्सा पद्धति जीवित है।

मुसलमानों के दस उपहार

विख्यात भारतीय इतिहासकार सर जदुनाथ सरकार ने अपने एक लेख में जो कलकत्ता की अँग्रेज़ी पत्रिका "प्रबुद्ध भारत" में प्रकाशित हुआ था, मुसलमानों के उन दस उपहारों का उल्लेख किया है जो उन्होंने भारत को दिये हैं। इन दस में से कई का उल्लेख ऊपर आ चुका है, शेष यह हैं :–

1. भारत का सम्पर्क बाहर की दुनिया से।
2. राजनीतिक एकता और पहनावे व संस्कृति की समता विशेषकर उच्च वर्गों में।
3. एक मिली जुली सरकारी भाषा और गद्य लेखन की सरल शैली जिसके विकास में हिन्दू-मुस्लिम दोनों ने हिस्सा लिया।
4. केन्द्र सरकार के [illegible] क्षेत्रीय भाषाओं का विकास ताकि [illegible] और [illegible] शाम हो और साहित्यिक [illegible] [illegible] विकास [illegible] हों।
5. समुद्र-मार्ग से अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का [illegible] भी

पहले दक्षिणी भारत के वासियों के हाथ में थी और लम्बे समय से निलम्बित पड़ी थी।

6. भारत की नव-सेना का गठन।

ज्योतिर्मय मशाल

एक भारतीय विद्वान श्री एन० एस० मेहता आई० सी० एस० अपने एक अँग्रेज़ी लेख में "भारतीय सभ्यता और इस्लाम" शीर्षक के अन्तर्गत इस्लाम के उपहारों का उल्लेख इस प्रकार करते हैं :–

> "इस्लाम यहाँ केवल एक ज्योतिर्मय मशाल लाया था जिसने प्राचीन काल में, जब कि प्राचीन सभ्यतायें पतनों-मुखी हो रही थीं, और पावन लक्ष्य मात्र बौद्धिक आस्थायें बन कर रह गया था, मानव जीवन पर छाये हुए घटा टोप अँधेरे को दूर कर दिया। अन्य देशों की तरह भारत में भी राजनीति से अधिक विचारों की दुनिया में इस्लाम की विजय की परिधि बढ़ी। आज की इस्लामी दुनिया भी एक आध्यात्मिक बिरादरी है जिसको अद्वैतवाद या एकेश्वरवाद (तौहीद) और समता (मसावात) के मिले जुले ईमानी रिश्ते ने आपस में जोड़ रखा है। दुर्भाग्यवश इस देश में इस्लाम का इतिहास शताब्दियों तक हुकूमत से जुड़ा (सम्बद्ध) रहा जिसके कारण इस्लाम के असली आकार-प्रकार पर पर्दा पड़ गया, और उसके उपकार निगाहों से ओझल हो गये।"

इतिहास के इन तथ्यों को दृष्टिगत रखते हुए साफ़ जाहिर है कि मुसलमानों ने इस महान देश को जिस क़दर फ़ायदा पहुँचाया वह उस फ़ायदे से बहुत अधिक है जो भारत ने उन्हें पहुँचाया। मुसलमानों का आगमन इस देश के इतिहास में तरक्की व खुशहाली के एक नये दौर की शुरूआत थी जिसे भारत कभी भुला नहीं सकता।

(2)

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में मुसलमानों का हिस्सा

मुसलमान आज़ादी की लड़ाई के अगुवा

भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में मुसलमानों का स्वाभाविक रुप से विशिष्ट योगदान रहा है। उन्होंने आज़ादी की लड़ाई में लीडर और अगुवा का पार्ट अदा किया। इसका कारण यह था कि अँग्रेज़ों ने जब हिन्दुस्तान पर क़ब्ज़ा करना शुरु किया और धीरे धीरे एक एक प्रान्त और रियासत उनके अधीन आने लगी उस समय मुसलमान ही हिन्दुस्तान के शासक थे। सब से पहले व्यक्ति जिस को इस ख़तरे का एहसास हुआ वह मैसूर का साहसी और स्वाभिमानी राजा फ़तेह अली खाँ टीपू सुल्तान (1799 ई०) था जिसने अपनी दूरदर्शिता और असाधारण सूझ-बूझ से यह बात महसूस कर ली अँग्रेज़ इसी प्रकार एक-एक प्रान्त और एक-एक रियासत हज़्म करते रहेंगे और यदि कोई संगठित शक्ति उनके मुक़ाबले पर न आई तो अन्ततः पूरा देश ने हड़प जायेंगे। अतएव उन्होंने अँग्रेज़ों से लड़ाई का फ़ैसला किया और अपने पूरे साज व सामान, संसाधन व फ़ौजी तैयारियों के साथ अँग्रेज़ों से मुकाबले के लिए मैदान में आ गये।

टीपू सुल्तान का संघर्ष और संकल्प

टीपू ने हिन्दुस्तान के राजाओं महाराजाओं और नवाबों को अंग्रेज़ों से लड़ाई पर अमादा करने की कोशिश की। इसउ दृश्य से

उन्होंने तुर्की के सुल्तान सलीम उस्मानी, दूसरे मुसलमान बादशाहों और हिन्दुस्तान के अमीरों और नवाबों से पत्र व्यवहार किया और जीवन भर अँग्रेज़ों से संघर्ष करते रहे। करीब था कि अँग्रेज़ों की सारी योजना पर पानी फिर जाये और वे इस देश से बिल्कुल बे दख़ल हो जायें मगर अँग्रेज़ों ने दक्षिणी भारत के अमीरों को अपने साथ मिला लिया और अन्ततः इस जुझारू बादशाह ने 4 मई 1799 ई० को श्रंगापटनम के युद्ध में शहीद होकर सुर्ख़रुई हासिल की। टीपू सुल्तान ने अँग्रेज़ों की गुलामी और उनके रहमोकरम पर ज़िन्दा रहने पर मृत्यु को प्राथमिकता दी। उनका मशहूर ऐतिहासिक कथन है कि गीदड़ के सौ वर्षीय जीवन से शेर का एक दिन का जीवन अच्छा है"। जब जर्नल हीर्स को सुल्तान की शहादत की ख़बर मिली तो उस ने उनकी लाश पर खड़े होकर यह शब्द कहे थे :—

"आज से हिन्दुस्तान हमारा है।"

भारत के इतिहास में टीपू सुल्तान से अधिक साहसी, समझदार, मज़हब व देश भक्ति और विदेशी सत्ता का दुश्मन नहीं पाया जाता। अँग्रेज़ों के लिए टीपू सुल्तान से अधिक भयावह और नफ़रत के क़ाबिल कोई और न था। बहुत समय तक (और वह ज़माना हमने भी देखा है) अँग्रेज़ अपने दिल की आग बुझाने के लिए और आज़ादी के इस हीरो को अपमानित करने के लिए अपने कुत्तों को सुल्तान टीपू के नाम से पुकारते थे।

सय्यद अहमद शहीद का पत्र राजा हिन्दू राव के नाम

स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास की एक अनकही कहानी और महत्वपूर्ण रहस्योंद्घाटन यह है कि गाँधी जी से बहुत पहले सन् 1825 में रायबरेली के एक गाँव में बैठे एक आध्यात्मिक पेशवा सय्यद अहमद शहीद ने राजा हिन्दू राव[1] वज़ीर ग्वालियर को पत्र

1 राजा हिन्दू राव महाराजा दौलत राव, रियासत ग्वालियर का वज़ीर था। दिल्ली में हिन्दू राव बाड़ा मुहल्ला उन्हीं के नाम पर आबाद है

www.abulhasanalinadwi.org

लिखा और कहा कि आइये हम आप मिलकर अँग्रेज़ों को इस देश से बाहर निकालें। यह पत्र मूलत: फ़ारसी में है जिसका हिन्दी अनुवाद इसप्रकार है :-

"जनाब को खूब मालूम है कि यह परदेसी समन्दरपार के रहने वाले, दुनिया जहान के ताजदार और यह सौदा बेचने वाले सल्तनत के मालिक बन गये हैं। बड़े-बड़े शासकों के शासन और उनकी इज्जत को इन्होंने ख़ाक में मिला दिया है। जो हुकूमत व राजनीति के योद्धा थे वह हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं। इस लिए विवश होकर कुछ ग़रीब व बेसरो सामान कमर व हिम्मत बाँधकर खड़े हो गये और अपने घरों से निकल आये। यह अल्लाह के बन्दे हरगिज़ दुनिया और जाह तलब (पद-लोलुप) नहीं हैं, माल व दौलत की इनको तनिक भी लालच नहीं।"[1]

आज़ादी की लड़ाई का संयुक्त मोर्चा

अँग्रेजी सत्ता, अँग्रेज़ों के घमंड, देश की सम्पदा के शोषण और देशवासियों की धार्मिक भावनाओं का निरन्तर अपमान सहन करने के बाद भारत की फ़ौजों ने मई 1857 ई० में अँग्रेजों के विरुद्ध बग़ावत शुरु कर दी। देखते देखते इस विद्रोह ने सिविल वार का रुप ले लिया जिसमें हिन्दू मुसलमानों ने कन्धे से कन्धा मिलाकर हिस्सा लिया। सिपाहियों ने दिल्ली की ओर कूच किया जो मुग़ल सल्तनत के अन्तिम बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र का निवास था और उनको इस लड़ाई का अगुवा, संयुक्त देशभक्त और जन अन्दोलन का निशान, हिन्दुस्तान का क़ानूनी बादशाह और विख्यात मुग़ल बादशाहों का वारिस क़रार दिया। हिन्दुस्तान के कोने कोने में उनके नाम पर और उनके झंडे के नीचे लड़ाई लड़ी गई। लोग उनको इस

---

1. देखें लेखक की पुस्तक "सय्यद अहमद शहीद" भाग 1 पृष्ठ 03

लड़ाई का हीरो समझते रहे, और दिल्ली को आज़ाद भारत का सिंहासन। किसी को भी इस से विरोध न था।

इस लड़ाई में मुसलमानों का हिस्सा

यद्यपि आज़ादी की यह लड़ाई सही अर्थ में सिविल वार थी, हिन्दू-मुसलमान सब इस में शामिल थे, और हिन्दुस्तान ने देशभक्ति, देश प्रेम, एकता और उत्साह का ऐसा दृश्य कभी न देखा था जैसा कि उस समय देखने में आया, तथापि अगुवई के मैदान में मुसलमानों का पलड़ा भारी था, और अधिकाँश लीडर मुसलमान ही थे।

इस आन्दोलन के वैचारिक और व्यावहारिक नेतृत्व में अज़ीम उल्ला खाँ, जनरल बख़्त ख़ाँ, ख़ान बहादुर ख़ाँ, मौलाना अहमद उल्ला, मौलाना लियाक़त अली, हज़रत महल आगे आगे थे। इन में मौलाना अहमद उल्ला शाह फ़ैज़ाबादी का व्यक्तित्व उजागर था होम्ज़ लिखता है, "मोल्वी अहमद उल्ला शाह उत्तरी भारत में अँग्रेजों का सब से बड़ा दुश्मन था।" पंडित सुन्दरलाल लिखते हैं, निस्संदेह दुनिया की आज़ादी के शहीदों में सन् 1857 के मोल्वी अहमद उल्ला शाह का नाम सदा के लिए आदरणीय रहेगा।"

हिस्ट्री आफ़ इण्डियन म्यूटिनी खण्ड चार के पृष्ठ 379 पर बालसन लिखता है कि :-

"मोल्वी (अहमद उल्ला) एक बड़ा ही आश्चर्यजनक व्यक्ति था। ग़दर के दिनों में सिपहसालार की हैसियत से उसकी क़ाबिलियत के बहुत से सबूत मिलते हैं। कोई भी दूसरा आदमी गर्व के साथ नहीं कह सकता कि मैं ने दो बार सरकोलिन कैम्बल को मैदान में हराया"।

आगे वह लिखता है।

"अहमद उल्ला शाह सच्चा देश भक्त था। उसने किसी निहत्थे का ख़ून बहाकर अपनी तलवार को नापाक (अपवित्र) नहीं किया। बहादुरी के साथ डटकर खुले मैदान में उन

www.abulhasanalinadwi.org

विदेशियों के साथ युद्ध किया जिन्होंने उसके वतन को छीन लिया था। हर देश के बहादुर और सच्चे लोगों को चाहिए कि मोल्वी अहमद शाह को इज्जत के साथ याद रखें।''

अँग्रेज़ों की, बदले की भवना और अत्याचार

आजादी की लड़ाई का यह प्रयास जब असफ़ल हुआ तो अँग्रेजों ने हिन्दुस्तानियों से बदला लेना शुरु किया, और उनके साथ ऐसा अत्याचार किया जिस में दया व इन्साफ़ और मानवता लेश मात्र को न थी। फलतः मार काट और तबाही व बर्बादी का बाज़ार ऐसा गर्म हुआ कि उसने चँगेज़ और हलाकू की याद ताज़ा कर दी। उन्हों ने बादशाह के तीन नवजवान लड़कों को क़त्ल किया, यद्यपि वे इससे पहले बादशाह को अमान दे चुके थे और ऐसी बरबरियत के साथ क़त्ल किया कि स्वयं बहुत से अँग्रेजों को झुर झुरी आ गई। इसके साथ शाही ख़ानदान के तैंतीस सदस्यों को क़त्ल किया गया जिसमें मरीज़, बूढ़े और अपाहिज भी शामिल थे। उन्होंने बादशाह को अपमानित किया और बड़े अपमानजनक ढँग से उनपर मुक़दमा चलाया। अँग्रेज चाहते थे कि बादशाह को भी क़त्ल कर दें लेकिन चूँकि एक फ़ौजी अफ़सर ने उनकी ज़िन्दगी की ज़मानत की थी, इसके लिए उनको जीवन भर के लिए "रँगून" देश निकाला कर दिया गया जहाँ बड़ी दुखद् परिस्थितियों में, और तँगी व परेशानी की हालत में उनकी मृत्यु हुई।

लूटमार और तबाही व बर्बादी

अँग्रेज़ी फ़ौजें दिल्ली में प्रवेश कर गईं। फ़ौजों को तीन दिन तक दिल्ली को लूटने की आम इजाजत दे दी गई। और उन्होंने खूब लूटमार की। जान लारेन्स ने अँग्रेज कमान्डर को दिसम्बर 1857 में लिखा है :-

"मुझे विश्वास है कि हमने जिस प्रकार बिना भेदभाव तमाम

तब्क़ों को लूटा है उसके लिए हमपर हमेशा लानत भेजी जायेगी (निन्दा की जायेगी) और ऐसा करना न्यायोचित होगा।''[1]

तीन दिन तक दिल्ली में क़त्ल व ग़ारतगरी का बाज़ार गर्म रहा, सर तन से जुदा होते रहे, ख़ून बहता रहा, और गोलियाँ दोषी और निर्दोष में भेद-भाव किये बिना सनसनाती रहीं। घरों को लूटा गया जो भाग सका वह अपनी आबरू लिए अपने बाल बच्चों को साथ लेकर दिल्ली से भाग गया, और अन्ततः दिल्ली, जिसे 'दुल्हन' की संज्ञा दी जाती थी, जो भारत की राजधानी थी, वीरान हो गई। अब वहाँ गिरे हुए मकान, मल्बा, सड़ी हुई लाशों और फटे हुए तन के सिवा कुछ नज़र न आता था। शहर की तस्वीर अँग्रेज़ कमान्डर लार्ड राबर्ट्स ने जो कानपुर से फ़ौज लेकर दिल्ली बग़ावत को कुचलने गया हुआ था, इन शब्दों में खींची है। यह 24 सितम्बर 1857 की घटना है जब अँग्रेज़ी फ़ौजें दिल्ली पर क़ाबिज़ हो चुकी थीं और लाल किला फ़तेह हो गया था :-

"प्रभात के समय दिल्ली से कूच करने की यह घड़ी बड़ी दर्दनाक थी जब हम लाल क़िले के लाहौरी दरवाज़ो से गुज़र कर चाँदनी चौक से गुज़रे। दिल्ली एक क़ब्रिस्तान मालूम होती थी, एक सन्नाटा था, हमारे अपने घोड़ों की टापों की आवाज़ के सिवा कोई आवाज़ किसी ओर से न आती थी। एक भी जीवित प्राणी हमारी नज़र से न गुज़रा, हर तरफ़ लाशें बिखरी पड़ी थीं, हर लाश में दुर्गन्ध पैदा हो चुकी थी। हम चुप चाप चले जा रहे थे, या समझ लीजिये कि वे इरादा मन ही मन बातें कर रहे थे ताकि मानवता के इन दर्दनाक अवशेषों के आराम मे ख़लल न पड़ जाये। जिन दृश्यों को हमारी आँखों ने

1. Life of Lord Lawrence Vol. II p. 158 By Boswarth Smith.

www.abulhasanalinadwi.org

देखा वह बड़े ही दुखदायी थे। कहीं कोई कुत्ता किसी लाश का नँगा अँग भँभोड़ कर रखा था, कहीं कोई गिद्ध हमारे क़रीब पहुँचने पर अपना घिनौना भोजन छोड़कर फड़फड़ाते परों से ज़रा दूर चला जाता, लेकिन उसका पेट इतना भर चुका था कि उड़ न सकता था। अधिकतर दिशाओं में मरे हुए ज़िन्दा मालूम होते थे, किसी के हाथ ऊपर उठे हुए थे जैसे कोई किसी को इशारा कर रहा हो। वास्तव में यह पूरा दृश्य इतना डरावना और भयावह था कि बयान में नहीं आ सकता। मालूम होता है हमारी तरह घोड़े भी भयभीत थे, इसलिए कि वह भी बिदक रहे थे और नथुने फुला रहे थे। पूरा वातावरण कल्पना से परे हद तक भयानक था। वातावरण बड़ा हानिकारक, और बीमारी व दुर्गन्ध से भरा था।"[1]

"इस्लामी बग़ावत"

यह एक क़त्ले आम था, लेकिन मुसलमान ख़ासतौर से इसका निशाना थे, इसलिए कि बहुत से ज़िम्मेदार अँग्रेज़ यह समझते थे कि यह इस्लामी जिहाद (धर्म युद्ध) था और मुसलमान इस बग़ावत के जन्मदाता, लीडर और गाइड हैं। अँग्रेज़ लेखक हेनरी मीड कहता है :—

"इस सरकशी को वर्तमान स्थिति में सिपाहियों की बग़ावत का नाम नहीं दिया जा सकता। निश्चय ही इसकी शुरुआत सिपाहियों से हुई लेकिन बहुत जल्द उसकी सच्चाई खुल गई, अर्थात् यह इस्लामी बग़ावत थी।"

एक समकालीन इतिहासकार लिखता है :—

"एक अँग्रेज़ का तरीक़ा यह हो गया था कि हर मुसलमान को बाग़ी (क्रान्तिकारी) समझता था। हर एक से पूछता

1. Lord Robert's Forty one years in India p. 152.

हिन्दू है या मुसलमान, जवाब में मुसलमान सुनते ही गोली मार देता।"

मुसलमानों का क़त्ले आम

फिर फाँसी का क्रम चला। चौराहों और सड़कों पर फाँसी के तख़्ते लगा दिये गये और यह स्थान अँग्रेज़ों के मनोरंजन व तफ़रीह के केन्द्र बन गये जहाँ आ कर वे फाँसी पाने वालों के सिसकने और दम तोड़ने के समय का आनन्द लेते। सिगरेट के कश लगाते और आपस में बातें करते रहते। जब फाँसी का काम पूरा हो जाता और वह उत्पीड़ित व्यक्ति अन्तिम साँस लेता तो हँसी और मुस्कराहट के साथ उसका स्वागत करते। इन बदनसीबों में बड़े बड़े प्रतिष्ठ और महान लोग थे। कुछ मुस्लिम मुहल्लों में ऐसी मार काट हुई कि एक व्यक्ति भी शेष न बचा एक समकालीन इतिहासकार लिखता है :—

"सत्ताईस हज़ार मुसलमानों ने फाँसी पाई। सात दिन बराबर क़त्ले आम रहा उसका हिसाब नहीं। अपने नज़दीक सानी तैमूरी नस्ल को न रखा, मिटा दिया। बच्चों तक को मार डाला। औरतों से जो सुलूक (बर्ताव) किया बयान से बाहर है जिसकी कल्पना मात्र से दिल दहल जाता है।"

मेलीसन लिखता है :—

"हमारे फ़ौजी अफ़सर हर क़िस्म के अपराधियों को मारते फिरते थे और बे दरेग़ उन्हें फाँसियाँ दे रहे थे, मानों वे कुत्ते थे या गीदड़ या तुच्छ प्रकार के कीड़े मकोड़े।"[1]

फ़ील्ड मार्शल लार्ड राबर्ट्स ने 21, जून 1857 को अपनी माँ को लिखा :—

"मृत्यु दण्ड का सबसे अधिक प्रभावी तरीक़ा यह है कि अपराधी को तोप से उड़ा दिया जाये। यह बड़ा ही

1. 1857 खण्ड दो पृष्ठ 177 लेखक : मेलीसन।

www.abulhasanalinadwi.org

भयावह दृश्य होता है किन्तु वर्तमान समय में हम ने इस पर ही अमल किया। हमारा उद्देश्य इन बदमाश मुसलमानों पर यह ज़ाहिर करना है कि ख़ुदा की मदद से अँग्रेज़ अब भी हिन्दुस्तान के मालिक रहेंगे।"[1]

स्वतंत्रता आन्दोलन की क़ीमत

सारांश यह है कि इस जन आन्दोलन की सब से बड़ी क़ीमत मुसलमानों को अदा करना पड़ी और अँग्रेज़ी हुकूमत के ज़िम्मेदार राजनीतिक, विचारक और लेखक यह समझते रहे कि वास्तव में मुसलमान ही 1857 की बग़ावत के ज़िम्मेदार हैं और उनकी आगे आने वाली नस्लों को इसका ख़मियाज : भुगतना चाहिए।

हेनरी हैमिल्टन टामस ने, जो बँगाल के एक बड़े सिविलियन थे, अपनी पुस्तक Late Rebellion in India and our Future Policy में जो सन् 1858 में अर्थात् आज़ादी की लड़ाई से केवल एक वर्ष बाद लिखी गई, मुसलमानों के बारे में अँग्रेज़ों का दृष्टिकोण सुस्पष्ट किया है :—

"मैं ने पहले बयान किया है कि 1857 को ग़दर के जन्मदाता और मूलकारक हिन्दू न थे, और अब मैं यह दिखाने की कोशिश करूँगा कि यह ग़दर मुसलमानों की साज़िश का नतीजा था। हिन्दू अगर वह अपनी इच्छा और स्रोत तक सीमित हों तो वह किसी ऐसी साज़िश में सम्मिलित न हो सकते थे न होना चाहते थे। वे (मुसलमान) ख़लीफ़ा प्रथम के समय से लेकर वर्तमान युग तक एक रूपता के साथ घमंडी, अनुदार और ज़ालिम रहे हैं। सदैव उनका उद्देश्य यह रहा है कि जिस प्रकार से भी हो इस्लामी

1. Edward Thompson—The other side of the Medal (1926) p. 40.

हुकूमत क़ायम हो, और ईसाइयों के साथ नफ़रत के विचार को बढ़ावा मिले।"

मुसलमानों की बे दख़ली और नौकरियों से वंचन

बाद में अँग्रेज़ी हुकूमत की यही राजनीति रही और इसी सिद्धान्त पर तमाम बड़े अफ़सर और विभागाध्यक्ष कार्य करते रहे कि मुसलमानों को प्रशासन के उच्च पदों से अलग रखा जाये, उस पर रोज़ी-रोटी के दरवाज़े बन्द किये जायें, उनके औक़ाफ़ और जायदादों को ज़ब्त किया जाये जिनसे उनके मदरसे चलते हैं। ऐसे स्कूल खोले जायें और ऐसी शिक्षा प्रणाली क़ायम की जाये जिससे मुसलमान लाभ न उठा सकें कुछ सरकारी घोषणाओं में यह स्पष्ट कर दिया जाता था कि अमुक अमुक पदों के लिए केवल हिन्दू लिये जायेंगे।

सर विलियम हन्टर ने कलकत्ता के एक फ़ारसी अख़बार दिनांक 14 जुलाई 1869 के हवाले लिखा है :—

"इस समाचार की कोई काट नहीं की गई कि सुन्दर बन के कमिश्नर ने गवर्नमेन्ट गज़ट ने एलान किया था कि जो पद रिक्त हुए हैं उन पर सिवाय हिन्दूओं के किसी की नियुक्ति न की जाये।"

आगे लिखा है :—

"मुसलमान अब इस क़दर गिर गये हैं कि अगर वे सरकारी नौकरी पाने की योग्यता भी प्राप्त कर लेते हैं तब भी उन्हें सरकारी घोषणा के द्वारा विशेष सतर्कता के साथ मना कर दिया जाता है। इनकी विवशता की ओर कोई ध्यान नहीं देता और उच्च अधिकारी तो उनके अस्तित्व को स्वीकार करना ही अपनी हतक समझते हैं।"

मुसलमानों से ईर्ष्या

मुसलमानों के मामले में अँग्रेज़ों का आक्रोश और प्रतिशोध उजागर था। मामूली से मामूली इल्ज़ाम अथवा मात्र शंका पर उनकी

www.abulhasanalinadwi.org

पकड़ की जाती और सख्त से सख्त सजायें दी जातीं भारत की उत्तरी पश्चिमी सीमा में अँग्रेजों ने मुसलमानों से घोर लड़ाई की और इसमें बहुत पैसा खर्च किया और बहुत नुकसान उठाया। जिस व्यक्ति के बारे में शंका हो कि वह इस गिरोह या सैयद अहमद शहीद के गिरोह से सम्बन्ध रखता है, उस पर मुकदमा चलाया गया। सन् 1864 में पटना, थानेसर और लाहौर के अनेक उलमा, सज्जन लोगों और व्यापारियों पर जो मुकदमे कायम किये गये उस से इस द्वेष भाव का अन्दाजा होता है जो अँग्रेजों के दिल में छिपा था, और पता चलता है कि वे मुसलमानों से कितने क्रोधित थे। इन में से कुछ लोगों को अंग्रेजों ने वहाबी के नाम से मशहूर किया। मौलाना यहिया अली, मौलवी मोहम्मद जाफ़र थानेशरी, मो० शफ़ी लाहौरी के सम्बन्ध में फाँसी का फ़ैसला हुआ और जज ने अपने फ़ैसले में कहा :—

"तुमको फाँसी दी जायेगी और तुम्हारी कुल जायदाद क़ुर्क होगी और तुम्हारी लाश भी तुम्हारे वारिसों को न दी जायेगी, बल्कि जिल्लत (अपमान) के साथ गोरिस्तान जेल मे गाड़ दी जायेगी। मैं तुमको फाँसी पर लटकता हुआ देख कर बहुत खुश हूँगा।"[1]।

अँग्रेज और उनकी औरतें फाँसी घर में आया करते थे ताकि उन बदनसीबों की बेकसी और लाचारी देख कर अपनी आँखें ठँडी कर सकें और उनकी परेशानी देखकर खुश हों। लेकिन जब उन्होंने देखा कि ये लोग बहुत खुश हैं तो उनको बहुत खराब लगा। अम्बाला के डिप्टी कमिश्नर ने चीफ कोर्ट का हुक्म सुनाया कि इनके मृत्यु दण्ड को काला पानी में बदल दिया गया और यह कहा कि :—

"तुम लोग फाँसी पड़ने को बहुत दोस्त रखते हो और शहादत समझते हो, इस वास्ते सरकार तुम्हारी दिल चाही सजा तुम को नहीं देगी। तुम्हारी फाँसी काला पानी से बदल गई"।

---

1. काला पानी लेखक मौलवी मो० जाफ़र थानेसरी -

अन्डमान के क़ैदी

इस अनोखे तरीके से सन् 1865 में मौलाना यहिया अली, मौलाना अहमद उल्ला अजीमाबादी, मौलवी अब्दुर्रहीम सादिकपुरी और मौलवी मोहम्मद जाफ़र थानेसरी को पोर्ट अन्डमान भेज दिया गया। मौलाना यहिया और मौलाना अहमद उल्ला का अन्डमान में देहान्त हो गया, और मौलवी मो० जाफ़र 18 वर्ष की क़ैद बामशक्कत और देश निकाले के बाद अपने वतन वापस हुए। पटना में खानदान सादिकपुर की तमाम जायदादें जब्त कर ली गईं उनके घर ढा दिये गये और उन पर हल चलवा दिया गया और उस जगह नई सरकारी इमारतें बनवा दी गईं। उनके मकबरों को तबाह व बर्बाद कर दिया गया। यह सब बदले की भावना से किया गया।

इसी प्रकार विशिष्ट उलमा की बड़ी संख्या को अन्डमान में देश निकाला की सजा दी गई जिनमें मौलाना फ़ज़ल हक़ खैराबादी मुफ्ती इनायत अहमद काकोरवी, मुफ्ती मज़हर करीम दरियाबादी के नाम उल्लेखनीय हैं। मौलाना फ़ज़ल हक़ का तो वहीं निधन हो गया और शेष दो आलिम लम्बे समय के बाद वतन वापस हुए।

शिक्षा व राजनीति में पिछड़ेपन का कारण

अँग्रेजी शासन का मुसलमानों के साथ यह निर्दयी व असाधारण मामला मुसलमानों में शिक्षा की कमी और उनको सरकारी नौकरियाँ न मिलने का बड़ा कारण था। आत्मरक्षा करने और जो आरोप उन पर लगाये जाते थे उनकी काट में उनका सारा समय खर्च हो जाता था। इसका अवसर नहीं मिलता था कि वे देश की राजनीति में हस्तक्षेप करें और उसमें प्रवेश कर अन्य देशवासियों के पास आ जा सकें।

इन्डियन नेशनल काँग्रेस की स्थापना और उसमें मुसलमानों का हिस्सा

सन् 1884 में इन्डियन नेशनल काँग्रेस का पहला अधिवेशन

www.abulhasanalinadwi.org

आयोजित हुआ जिस में कुछ विशिष्ट विद्वान और विचारक मुसलमान भी शरीक थे। कांग्रेस का चौथा अधिवेषन 1887 मैं मद्रास में हुआ जिसकी अध्यक्षता बदरूद्दीन तय्यब जी ने की। मीर हुमायूंजाह इसमें शरीक हुए और कांग्रेस के लिए पाँच हज़ार रुपये देने का एलान किया। इस अधिवेशन में मुसलमान ज़िम्मेदारों, धनवानों वकीलों और व्यापारियों की एक बड़ी संख्या सम्मिलित हुई।

सर सय्यद अहमद खाँ का अलग राजनीतिक मोर्चा

मुसलमानों में शैक्षिक आन्दोलन के लीडर सर सय्यद अहमद ख़ाँ प्रारम्भ में राष्ट्रीय एकता के समर्थक थे लेकिन बाद में मुसलमानों के शैक्षिक, राजनीतिक व आर्थिक पिछड़ेपन को देखकर उन्होंने इससे अलग होने में बेहतरी समझी। और बाहर रह कर उन्होंने मुसलमानों को सचेत किया कि कहीं वे उत्साही हिन्दुओं और चरमपन्थी बँगालियों के प्रभाव में न आजायें जो अँग्रेज़ी राजनीति की आलोचना और अपने अधिकारों की माँग कर रहे थे। सर सय्यद अहमद खाँ ने एक इस्लामी मोर्चा बनाने की सलाह दी और राजनीति से अलगाव पर बल दिया इसलिए कि उनके कथनानुसार मुसलमानों के लिए नई उलझनें और मुश्किलें पैदा हो जायेंगी।[1]

उलमा को कांग्रेस के लिये हिमायत (समर्थन)

लेकिन स्वच्छन्द विचार के मुसलमानों की एक बड़ी संख्या जिनमें सब से आगे उलमा थे, कांग्रेस के समर्थन और राजनैतिक व राष्ट्रीय आन्दोलनों में हिस्सा लेने के क़ायल थी और राजनीत को मुसलमानों

---

1. यह तरीक़ा और सोचने का ढँग निःसन्देह ग़लत था। यह निर्णय वास्तव में अँग्रेज़ी राजनीतिक मिस्टर बेग और उनके उत्तराधिकारी मिस्टर मोरिसन से प्रभावित होकर किया गया था जो दीर्घकाल तक मुसलमानों के मन [illegible] रहे। सच तो यह है कि राजनीति से छुटकारे ने मुस[illegible] अस्तित्व और राष्ट्रीय जीवन को बहुत नुकसान पहुँचाया।

के लिए "वर्जित" नहीं समझती थी। मौलाना मोहम्मद साहब लुधियानवी ने सन् 1888 में "नुसरतुल अबरार" के नाम से फ़तवों का एक संकलन प्रकाशित किया जिसमें कांग्रेस की हिमायत को उचित ठहराया गया था। इस पर न केवल हिन्दुस्तान के बड़े बड़े उलमा बल्कि मदीना और बग़दाद के उलमा के भी हस्ताक्षर थे। इनमें मौलाना रशीद अहमद गँगोही और मौलाना लुत्फ़ उल्ला अलीगढ़ी भी शामिल थे। कांग्रेस का पाँचवां वार्षिक अधिवेषन जो सन् 1888 में इलाहाबाद में हुआ उसमें भी कुछ विशिष्ट उलमा शरीक हुए इस प्रकार मुसलमान कांग्रेस के प्रयासों में हिस्सा लेते रहे और देशवासियों के साथ मिलकर इसके विकास में लगे रहे।

बलक़ान का युद्ध, और ब्रिटेन के विरुद्ध वैचारिक बग़ावत

सन् 1912 में बलक़ान का युद्ध छिड़ा और योरोपीय राज्यों विशेषकर ब्रिटेन के विरुद्ध जनमत में आक्रोश की एक तीव्र लहर दौड़ गई और पूरब की इस्लामी राजनीतिक चेतना का लावा जो धीरे धीरे पक रहा था, फूट पड़ा। इसी ज़माने में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद ने "अल-हिलाल" निकाला जिसमें बहुत भड़काने वाले लेख प्रकाशित होते और योरोप की मुस्लिम-दुश्मनी राजनीति पर भरपूर आलोचना की जाती। हज़ारों मुसलमान बड़े शौक़ से इसको पढ़ते। मौलाना मोहम्मद अली ने कलकत्ता से "कामरेड" निकाला। वे अँग्रेज़ी राजनीति पर व्यंगात्मक शैली में आलोचना करते थे। इसी प्रकार मौलाना ज़फ़र अली ख़ाँ का अख़बार "ज़मींदार" और दूसरे समाचार पत्र और पत्रिकाओं का प्रकाशन हुआ। इनके माध्यम से पूरे देश में एक वैचारिक क्रान्ति की आग फैल गई। फलतः मौलाना मो० अली, शौकत अली, मौलाना अबुल कलाम आज़ाद मौलाना हसरत मोहानी को गिरफ्तार कर लिया गया।

मुसलमानों की राजनीतिक चेतना और उनमें आत्मविश्वास पैदा करने के विषय में मौलाना शिबली नोमानी के प्रयासों को भुलाया

www.abulhasanalinadwi.org

नहीं जा सकता, उन्होंने "अल-हिलाल" की नज्मों और "मुस्लिम गजट" के लेखों के माध्यम से शिक्षित वर्ग को प्रभावित किया।

मौलाना महमूद हसन

दारुल उलूम देववन्द के प्रधानाध्यापक मौलाना महमूद हसन, जो बाद में शेखुलहिन्द के नाम से मशहूर हुए, अँग्रेजी हुकूमत और सत्ता के कट्टर विरोधी थे। सुलतान टीपू के बाद अँग्रेजों का ऐसा दुश्मन और विरोधी देखने में नहीं आया। वह उस्मानिया सल्तनत के पक्के समर्थक थे और हिन्दुस्तान की आजादी और स्वतंत्र राष्ट्रीय सरकार की स्थापना के बहुत समर्थक थे। वह उन लोगों में थे जिन की सारी दिलचस्पी और सारी कोशिश देश की आजादी पर केन्द्रित थी। उन्होंने इस क्रम में अफ़गानिस्तान की हुकूमत, और उस्मानिया सल्तनत के राष्ट्र प्रमुखों से सम्पर्क स्थापित करने का प्रयास किया[1] सन् 1916 में शरीफ़ हुसैन की हुकूमत ने उनको मदीना में गिरफ्तार करके अँग्रेजी हुकूमत के हवाले कर दिया। अँग्रेजी हुकूमत ने उनको और उनके कुछ साथियों और शिष्यों को सन् 1917 में माल्टा में देश निकाला कर दिया। यह लोग सन् 1920 तक माल्टा में रहे।

मौलाना अब्दुल बारी फ़िरँगी महली

मौलाना अब्दुल बारी फ़िरँगी महली (मृत्यु 1926) स्वतंत्रता आन्दोलन और ख़िलाफ़त आन्दोलन के पक्के और विशिष्ट नेताओं में

---

1. मौलना महमूद हसन भारत की आजादी के प्रति समर्थन जुटाने और अँग्रेजों के विरुद्ध हिमायत और मदद के लिए अनवर पाशा और जमाल पाशा से पत्र प्राप्त करने में सफल हो गये थे। उस पत्र को मौलाना ने लकड़ी के तख्तों के अन्दर छिपा कर उसका सन्दूक बनाया और उसमें रेशमी कपड़े भरकर हिन्दुस्तान भेजा जहां वह गन्तव्य स्थान तक पहुँच गये। यह किस्सा रेशमी रूमाल के नाम से मशहूर हुआ। रोलेट ने अपनी मशहूर रिपोर्ट में इसका उल्लेख किया है।

थे। वह जमीयतुल उलमा हिन्द के संस्थापक भी थे। उनका व्यक्तित्व और उनका लखनऊ का निवास (महल सराय फ़िरँगी महल) बहुत दिनों तक मुसलमानों की श्रद्धा व राजनीति का केन्द्र रहा।

रोलेट रिपोर्ट

सन् 1918 में रोलेट की रिपोर्ट प्रकाशित हुई जिसमें मुसलमानों को विशेषरूप से निशाना बनाया गया और उनको बग़ावत का जिम्मेदार क़रार दिया गया। इसकी प्रतिक्रिया देश भर में बहुत तीव्र हुई।

ख़िलाफ़त अन्दोलन और हिन्दू-मुस्लिम एकता

सन् 1919 में मोलाना मोहम्मद अली और शौकत अली को छोड़ दिया गया। उस समय हिन्दू-मुस्लिम एकता का शानदार दृश्य देखने में आया। दोनों देश की आजादी के लिए और अँग्रेजों से मुक़ाबले के लिए एक जुट हो गये और पूरे देश में बग़ावत और क्रान्ति का एक उबाल पैदा हो गया। इस आन्दोलन में गाँधी जी पूरे संकल्प के साथ शरीक हुए। उन्होंने अली बिरादरान के साथ पूरे देश का दौरा किया, बड़े बड़े जलसे आयोजित किये गये। लोग इन लीडरों का जिस गर्म जोशी के साथ स्वागत करते उसका बयान मुश्किल है। इनका भव्य स्वागत होता और लोग नारे लगाते।

मोपलों पर अँग्रेजी अत्याचार

भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन और ख़िलाफ़त आन्दोलन के दौरान सबसे बड़ा जानी व माली नुक़सान मोपलों को उठाना पड़ा। मोपले दक्षिणी भारत की एक मुस्लिम बिरादरी है और लाखों की संख्या में मालाबार तट (जो अब केरल कहलाता है) पर आबाद है। 21 अगस्त 1921 को मोपलों ने अँग्रेजी हुकूमत के बिरुद्ध हथियार उठाये और लम्बे समय से की जा रही ज्यादतियों व अत्याचार का

www.abulhasanalinadwi.org

जवाब देना शुरू किया। यह हँगामा फ़रवरी 1922 के दूसरे हफ्ते तक जारी रहा। इसमें कई हज़ार मोपले मारे गये। इसको रोकने के लिए ब्रिटेन के जँगी जहाज़ (युद्ध पोत) को हरकत में आना पड़ा। अगस्त से दिसम्बर तक गवर्नमेन्ट को इस आपरेशन पर इक्यावन लाख रुपया खर्च करना पड़ा। मोपले क़ैदी जानवरों की तरह गाड़ी में भर दिये गये तीन डाक्टरों ने एक मत फैसला दिया कि जिस गाड़ी में मोपले क़ैदी रोके गये थे वह कदापि इन्सानों के लायक़ नहीं थी। उनमें से बहुत से लोग गाड़ी के अन्दर ही घुट कर मर गये। हँगामा दब जाने के बाद भी मोपलों पर कड़ी निगरानी जारी रही और उन के साथ अपमानजनक बर्ताव किया जाता रहा। और उनको नागरिक अधिकारों से वँचित रखा गया। मालाबार जाँच कमेटी की सरकारी रिपोर्ट में कहा गया है कि :—

"कम से कम पचीस हजार मोपला औरतें और बच्चे हैं जिनकी दशा अत्यन्त दयनीय है और अगर उन्हें तत्काल कोई उचित सहायता न पहुँचाई गई तो उनमें बहुत से भूख और बीमारियों से ग्रसित होकर मर जायेंगे।"

www.abulhasanalinadwi.org

संक्षिप्त परिचय

मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी का जन्म सन् 1914 ई० में एक ऐसे परिवार में हुआ था जिसमें राष्ट्र एवं देश की निः स्वार्थ सेवा की लम्बी परम्परा रही है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा घर पर हुई तत्पश्चात् इन्होंने दारुल उलूम नदवतुल उलमा से उच्च कोटि की शिक्षा योग्यता प्राप्त की। उन्होंने मौलाना हुसैन अहमद मदनी के संरक्षरण में हदीस की शिक्षा और तफ़सीर (कुरआन की व्याख्या) लाहौर के मौलाना अहमद अली के संरक्षरण में प्राप्त की। इस समय आप दारूल उलूम नदवतुल उलमा के नाजिम (Rector) हैं।

आपने अरबी और उर्दू में इस्लामिक निष्ठा, साहित्य और इतिहास से संबंधित विषयों पर 80 (अस्सी) से अधिक पुस्तकें लिखी है जिनका पर्याप्त संख्या में अंग्रेजी, फ्रान्सीसी, टर्की, इन्डोनेशियाई, फारसी, फिलिपाइन और दूसरी भाषाओं में अनुवाद हो चुका है।

आपने सन् 1974 में पयामे-इन्सानियत के नाम से एक आन्दोलन चलाया और इसके लिए सम्पूर्ण देश में भ्रमण किया। इस आन्दोलन का मुख्य उद्देश्य आबादी के विभिन्न सम्प्रदायों में स्नेह, प्रेम एवं भाई चारगी की भावना उत्पन्न करना और भारतीय समाज से भ्रष्टाचार, पक्षपात और चोर बाज़ारी की बुराइयों को जड़ से समाप्त करना है।

आपने विस्तार रूप से पर्यटन किये हैं और आक्सफोर्ड, हार्वर्ड, बर्लिन आदि जैसी विश्व-प्रसिद्ध विश्व विद्यालयों में व्याख्यान दिये हैं।

आप इस्लामिक केन्द्र आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के अध्यक्ष हैं तथा इस्लामिक लिट्रेचर के विश्व फोरम, (जिसके सम्पूर्ण मुस्लिम जगत के लोग सदस्य हैं) के चेयर मैन, लक्जेमबर्ग के फाउंडेशन फार स्टडीज और रिसर्च के अध्यक्ष, अकेडमी आफ आर्टस एण्ड लेटरस, डमिश्क (सीरिया) के सदस्य, नेशनल फाउन्डेशन फार ट्रान्सलेशन रिसर्च एन्ड स्टडीज कारथेज (ट्यूनिशिया) के सदस्य, अकेडमी आफ रिसर्च इन इस्लामिक सिविलाईजेशन, अम्मान (जार्डन) के सदस्य, फेडेरेशन आफ इस्लामिक यूनीवर्सिटीज रबात मोरक्को के सदस्य, एडवाइज़री कमेटी, यूनिवर्सिटी आफ मदीना के सदस्य, मुस्लिम वर्ल्डलीग मक्का (सऊदी अरब) के फाउन्डर सदस्य, शिबली अकेडमी, आजमगढ़ (यू०पी०) के अध्यक्ष, आल-इन्डिया मुस्लिम परसनल ला बोर्ड के अध्यक्ष, इस्लामिक रिसर्च एन्ड पब्लीकेन्स लखनऊ के अध्यक्ष हैं।

आपको इस्लामिक अध्ययन के अपने विशिष्ट योगदान पर सन् 19 में शाह फैसल एवार्ड से सम्मानित किया गया।

Printed at Parekh Offset, Tagore Marg, Lucknow-7

www.abulhasanalinadwi.org